Date :

HISTORY (H)

PART - B.

PAPER - III

B.A - II

B. (iii) महमूद गजनवी के आक्रमण का स्वरूप :

~~GHAZNAVI~~ ~~GHAZNAVI~~

GHAZNAVI

(1001 - 1026 ई०)

⇒ प्रथम आक्रमण (1001 ई०)

गजनवी ने अपना पहला आक्रमण 1001 ई० में भारत की सीमा वर्ती नगरों पर आक्रमण किया। पर यहाँ उसे विशेष सफलता नहीं मिली।

⇒ दूसरा आक्रमण (1001 - 1002)

इस अभियान में उसने जयपाल के विरुद्ध युद्ध किया।

Scanned with CamScanner

SELCO

Date :

इस आक्रमण में जयपाल ने आत्महत्या कर लिया।

⇒ तीसरा आक्रमण (1004 ई०)

गजनवी ने कच्छ के शासक को दंडित करने के लिए आक्रमण किया। महमूद के भय के कारण बजिरा ने सिन्धु नदी के जंगलों में शरण लिया फिर आत्महत्या कर लिया।

⇒ चौथा आक्रमण (1005 ई०)

इस युद्ध में मुल्तान के शासक दाऊद को हरा कर उसे अधिनता स्वीकार कर लिया।

⇒ पाँचवा आक्रमण (1007 ई०)

गजनवी ने जयपाल के पौत्र सुखपाल को राज्यपाल नियुक्त किया था लेकिन कुछ दिनों के बाद उसने स्वतंत्रता घोषित कर दिया फिर वह उसे हरा कर बंदी

Scanned with CamScanner

Date :

बना लिया।

⇒ छठा आक्रमण (1008ई०)

1008 ई० में अपने इस अभियान में आनन्दपाल को पराजित किया। इस आक्रमण में महमूद को अपार धन की प्राप्ति हुई।

⇒ सातवा आक्रमण (1009ई०)

इस आक्रमण में अलवर राज्य के नरायणपुर पर विजय प्राप्त की।

⇒ आठवाँ आक्रमण (1010ई०)

आठवाँ आक्रमण मुल्तान पर था। वहाँ के शासक दाऊद को पराजित कर उसने मुल्तान के शासक को उसने सदा के लिए अधीन कर लिया।

⇒ नौवाँ आक्रमण (1010 ई०)

इस आक्रमण में वह थानेश्वर पर किया।

⇒ दसवां आक्रमण (1013ई०)

हिन्दूशाही शासक आंनदपाल ने नन्दशाह की राजधानी

Scanned with CamScanner

को राजधानी बनाया। वहाँ का शासक त्रिलोचन पाल था। वहाँ से भी महमूद को संपत्ती की प्राप्ति हुई।

⇒ ग्यारहवाँ आक्रमण (1015 ई०)

यह आक्रमण त्रिलोचन पाल के पुत्र भीमपाल के विरुद्ध था। जो कश्मीर पर शासन कर रहा था। युद्ध में भीमपाल पराजित हुआ।

⇒ बारहवाँ आक्रमण (1018 ई०)

यह आक्रमण कन्नौज पर किया। वहाँ के राज्यपाल बिना युद्ध के लिए आत्म समर्पण के कारण कालिंजर और चंदेलशासक क्रोधित हो गया और ग्वालियर के शासक के साथ संधि कर के राज्यपाल को मार डाला।

⇒ तेरहवाँ आक्रमण (1020)

इस अभियान में बुंदेलखंड आदि को जीता।

Scanned with CamScanner

Date :

⇒ चौदहवाँ आक्रमण (1021 ई.)
इस आक्रमण में ग्वालियर और कालिंजर पर आक्रमण किया। इन शासकों ने विवश होकर संधि कर ली।

⇒ पन्द्रहवाँ आक्रमण (1024 ई.)
इस अभियान में गजनवी ने जैसलमेर, गुजरात तथा गुजरात पर आक्रमण कर वह विजय स्थापित किया।

⇒ सोलहवाँ आक्रमण (1025 ई.)
इस सोलहवें आक्रमण में उसने सोमनाथ को निशाना बनाया। सोमनाथ पर विजय प्राप्त करने के बाद वहाँ के प्रसिद्ध मंदिर को तोड़ दिया और वहाँ से अपार धन की प्राप्ति हुई। इस मंदिर को लूटने के क्रम में उसने 50,000 ब्राह्मणों और हिन्दुओं को मौत के घाट उतार दिया।

Scanned with CamScanner

Date :

→ सतरहवाँ आक्रमण (1027 ई०)

यह महमूद गजनवी का अंतिम आक्रमण था। यह आक्रमण सिन्ध और मुल्तान के तटवर्ती क्षेत्रों के जाटों के विरुद्ध था। इसने जाट को पराजित किया।

इस प्रकार महमूद गजनवी का आक्रमण धन की प्राप्ति था। उसे मूर्तिभंजक आक्रमणकारी भी कहा गया है।

DR. UDAY KUMAR
DR. L.K.V.D. College Tajpur.